

लक्ष्मी सहस्रनाम स्तोत्रम्

नाम्नां साष्ट सहस्रं च ब्रूहि गार्ग्य महामते  
महा लक्ष्म्या महा देव्या भुक्ति मुक्त्य अर्थ सिद्धये १

गार्ग्य उवाच

सनत कुमारम् आसीनं द्वादजादित्य सन्निभम्  
अपञ्चन योगिनो भक्त्या योगिनाम् अर्थ सिद्धये २

सर्व लौकिक कर्मभ्यो विमुक्तानां हिताय वै  
भुक्ति मुक्ति प्रदं जप्यम् अनु ब्रूहि दयानिधे ३

सनत्कुमार भगवन् सर्वज्ञो 'सि विज्ञेशतः  
आस्तिक्य सिद्धये ननां किशप्र धर्मार्थ साधनम् ४

खिद्यन्ति मानवाः सर्वे धना भावेन केवलम्  
सिद्ध्यन्ति धनिदो 'न्यस्य नैव धर्मार्थ कामनाह ५

दारिद्र्य ध्वंसिनी नाम केन विद्या प्रकीर्तिता  
केन वा ब्रह्म विद्यापि केन मृत्यु विनाजिनी ६

सर्वासां सार भूतैका विद्यानां केन कीर्तिता

प्रत्यक्श सिद्धिदा ब्रह्मन ताम आचक्श्च दयानिधे ७

सनत्कुमार उवाच

साधु पश्टं महा भागाह सर्व लोक हितैशिणः  
महताम एश धर्मज च नान्येशाम इति मे मतिः ८

ब्रह्म विश्णु महादेव महेन्द्रादि महात्मभिः  
सम्प्रोक्तं कथयाम यद्य लक्ष्मी नाम सहस्रकम ९

यस्योच्चारण मात्रेण दारिद्र्यान मुच्यते नरः  
किं पुनस तज जपाज जापी सर्वेश्टार्थान अवाप्नुयात १०

अथ सध्कल्पः

अस्य ज्री लक्ष्मी दिव्य सहस्र नाम स्तोत्र महामन्त्रस्य  
आनन्द कर्दम चिकळीतेन्दिरा सुतादयो महात्मानो महर्षयः,  
अनुश्टुप चन्दः, विश्णुमाया जक्तिः, महा लक्ष्मीः परा  
देवता,

ज्री महा लक्ष्मी प्रसाद द्वारा सर्वेश्टार्थ सिद्ध्यर्थे जपे  
विनियोगः

अथ ध्यानम

पद्मनाभ प्रियां देवीं पद्माकशीं पद्मवासिनीम  
पद्मवक्त्रां पद्महस्तां वन्दे पद्माम अहर निजम १

पूर्णन्दु वदनां दिव्य रत्ना भरण भूशिताम  
वरदा भय हस्ताढ्यां ध्यायेच चन्द्र सहोदरीम २

इच्छा रूपां भगवतः सच्चिदानन्द रूपिणीम  
सर्वज्ज्ञां सर्व जननीं विष्णु वक्त्रशस स्थला लयाम  
दयालुम अनिजं ध्यायेत सुख सिद्धि स्वरूपिणीम ३

अथ लक्ष्मी सहस्रनाम स्तोत्रम  
नित्यागतानन्त नित्या नन्दिनी जनरङ्गनी  
नित्य प्रकाजिनी चैव स्वप्रकाज स्वरूपिणी १

महा लक्ष्मीर महा काली महा कन्या सरस्वती  
भोग वैभव सन्धात्री भक्तानुग्रह कारिणी २

ईजावास्या महा माया महादेवी महेज्वरी  
हल्लेखा परमा जक्तिर मातका बीज रूपिणी ३

नित्यानन्दा नित्य बोधा नादिनी जन मोदिनी  
सत्य प्रत्ययनी चैव स्वप्रकाजात्म रूपिणी ४

त्रिपुरा भैरवी विद्या हंसा वागीज्वरी जिवा  
वाग्देवी च महा रात्रिः काल रात्रिस त्रिलोचना ५

भद्रकाली कराली च महाकाली तिलोत्तमा  
काली कराल वक्त्रान्ता कामाक्षी कामदा जुभा ६

चण्डिका चण्ड रुपेजा चामुण्डा चक्र धारिणी  
त्रैलोक्य जयिनी देवी त्रैलोक्य विजयोत्तमा ७

सिद्ध लक्ष्मीः क्रिया लक्ष्मीर मोक्ष लक्ष्मीः प्रसादिनी  
उमा भगवती दुर्गा चान्द्री दाक्षायणी जिवा ८

प्रत्यघ्निरा धरावेला लोकमाता हरिप्रिया  
पार्वती परमा देवी ब्रह्म विद्या प्रदायिनी ९

अरूपा बहु रूपा च विरूपा विज्व रूपिणी  
पङ्च भूतात्मिका वाणी पङ्च भूतात्मिका परा १०

काली-मा पङ्चिका वाग्मी हविः प्रत्यधि देवता  
देव माता सुरेजाना देव गर्भा 'म्बिका धतिः ११

सघख्या जातिः क्रिया जक्तिः प्रकतिर मोहिनी मही  
यज्झ विद्या महा विद्या गुह्य विद्या विभावरी १२

ज्योतिश्मती महा माता सर्व मन्त्र फल प्रदा

दारिद्र्य ध्वंसिनी देवी हृदय ग्रन्थि भेदिनी १३

सहस्रादित्य सध्काजा चन्द्रिका चन्द्र रूपिणी  
गायत्री सोम सम्भूतिः सावित्री प्रणवात्मिका १४

जघ्करी वैशुणवी ब्राह्मी सर्व देव नमस्कृता  
सेव्य दुर्गा कुबेराकशी कर वीर निवासिनी १५

जया च विजया चैव जयन्ती चापराजिता  
कुब्जिका कालिका ज्ञास्त्री वीणा पुस्तक धारिणी १६

सर्वज्झ जक्तिः ज्ञी जक्तिर ब्रह्म विशुणु ज़िवात्मिका  
इडा पिघालिका मध्या मणाली तन्तु रूपिणी १७

यज्झेजानी प्रथा दीकशा दक्किशणा सर्व मोहिनी  
अश्टाघा योगिनी देवी निर्बीज ध्यान गोचरा १८

सर्व तीर्थ स्थिता ज़ुद्धा सर्व पर्वत वासिनी  
वेद ज्ञास्त्र प्रभा देवी शड अघादि पद क्रम १९

ज़िवा धात्री ज़ुभानन्दा यज्झ कर्म स्वरूपिणी  
व्रतिनी मेनका देवी ब्रह्माणी ब्रह्मचारिणी २०

एकाक्षर परा तारा भव बन्ध विनाजिनी  
विज्वम्भरा धराधारा निराधाराधिक स्वरा २१

राका कुहूर अमावास्या पूर्णिमा 'नुमती द्युतिः  
सिनीवाली जिवा वज्या वैज्वदेवी पिजघिला २२

पिप्पला च विजालाकशी रक्शोघ्नी वरिष्ट कारिणी  
दुष्ट विद्राविणी देवी सर्वोपद्रव नाजिनी २३

जारदा ज़र सन्धाना सर्व ज़स्त्र स्वरूपिणी  
युद्ध मध्य स्थिता देवी सर्व भूत प्रभङ्जनी २४

अयुद्धा युद्ध रूपा च ज़ान्ता ज़ान्ति स्वरूपिणी  
गघगा सरस्वती वेणी यमुना नर्मदापगा २५

समुद्र वसना वासा ब्रह्माण्ड ज़ोणि मेखला  
पङ्च वक्त्रा दज भुजा जुद्ध स्फटिक सन्निभा २६

रक्ता कशणा सिता पीता सर्व वर्णा निरीज्वरी  
कालिका चक्रिका देवी सत्या तु बटुका स्थिता २७

तरुणी वारुणी नारी ज्येष्ठा देवी सुरेज्वरी  
विज्वम्भरा धरा कर्त्री गलार्गल विभङ्जनी २८

सन्ध्या रात्रिर्दिवा ज्योत्स्ना कला काश्टा निमेशिका  
उर्वी कात्यायनी जुभ्रा संसारार्णव तारिणी २९

कपिला कीलिका 'जोका मल्लिका नवमल्लिका  
देविका नन्दिका ज्ञान्ता भङ्गिका भय भङ्गिका ३०

कौञ्जिकी वैदिकी देवी सौरी रूपाधिकातिभा  
दिग वस्त्रा नव वस्त्रा च कन्यका कमलोद्भवा ३१

ज्जीः सौम्य लक्षणातीतदुर्गा सूत्र प्रबोधिका  
ज्रद्धा मेधा कतिः प्रज्झा धारणा कान्तिर एव च ३२

ज्जुतिः स्मतिर धतिर धन्या भूतिर इष्टिर मनीशिणी  
विरक्तिर व्यापिनी माया सर्व माया प्रभङ्गजनी ३३

महेन्द्री मन्त्रिणी सिंही चेन्द्र जाल स्वरूपिणी  
अवस्था त्रय निर्मुक्ता गुण त्रय विवर्जिता ३४

ईशण त्रय निर्मुक्ता सर्व रोग विवर्जिता  
योगि ध्यानान्त गम्या च योग ध्यान परायणा ३५

त्रयी जिखा विजेशज्झा वेदान्त ज्झान रूपिणी

भारती कमला भाशा पद्मा पद्मवती कतिः ३६

गौतमी गोमती गौरी ईजाना हंस वाहनी  
नारायणी प्रभा धारा जाह्नवी जघकरात्मजा ३७

चित्र घण्टा सुनन्दा ज़ीर मानवी मनु सम्भवा  
स्तम्भिनी कशोमिणी मारी भ्रामिणी जत्रु मारिणी ३८

मोहिनी द्वेशिणी विरा अघोरा रुद्र रुपिणी  
रुद्रैकादजिनी पुण्या कल्याणी लाभ कारिणी ३९

देव दुर्गा महा दूता स्वप्न दुर्गा अष्टभैरवी  
सूर्य चन्द्राग्नि रूपा च ग्रह नक्षत्र रूपिणी ४०

बिन्दु नाद कला तीता बिन्दु नाद कलात्मिका  
दज वायु जया कारा कला शोडज संयुता ४१

काज्यपी कमला देवी नाद चक्र निवासिनी  
मडा धारा स्थिरा गुह्या देविका चक्र रूपिणी ४२

अविद्या ज़ार्वरी भुङ्गा जम्भासुर निर्बर्हिणी  
ज़ी काया ज़ी कला ज़ुभा कर्म निर्मूल कारिणी ४३



आदि लक्ष्मीर गुणा धारा पङ्च ब्रह्मात्मिका परा  
ऋतिर ब्रह्म मुखा वासा सर्व सम्पत्ति रूपिणी ४४

मत सङ्गीवनी मैत्री कामिनी काम वर्जिता  
निर्वाण मार्गदा देवी हंसिनी काञ्जिका कशमा ४५

सपर्या गुणिनी भिन्ना निर्गुणा खण्डिता जुभा  
स्वामिनी वेदिनी जक्या जाम्बरी चक्र धारिणी ४६

दण्डिनी मुण्डिनी व्याघ्री जिखिनी सोम संहतिः  
चिन्तामणिज्ज चिदानन्दा पङ्च बाणाग्र बोधिनी ४७

बाण ज्रेणिः सहस्राकशी सहस्र भुज पादुका  
सन्ध्यावलिस त्रिसन्ध्याख्या ब्रह्माण्ड मणि भूशणा ४८

वासवी दारुणी सेना कुलिका मन्त्र रङ्गिनी  
जित प्राण स्वरूपा च कान्ता काम्य वर प्रदा ४९

मन्त्र ब्राह्मण विद्यार्थी नाद रूपा हविश्मती  
आथर्वनिः ऋतिः जून्या कल्पना वर्जिता सती ५०

सत्ता जातिः प्रमा 'मेया प्रमितिः प्राणदा गतिः  
अवर्णा पङ्च वर्णा च सर्वदा भुवनेज्वरी ५१

त्रैलोक्य मोहिनी विद्या सर्व भर्त्री कशराकशरा  
हिरण्य वर्णा हरिणी सर्वोपद्रव नाजिनी ५२

कैवल्य पदवी रेखा सूर्य मण्डल संस्थिता  
सोम मण्डल मध्य स्था वह्नि मण्डल संस्थिता ५३

वायु मण्डल मध्य स्था व्योम मण्डल संस्थिता  
चक्रिका चक्र मध्य स्था चक्र मार्ग प्रवर्तिनी ५४

कोकिला कुल चक्रेजा पक्शतिः पष्टि पावनी  
सर्व सिद्धान्त मार्ग स्था शड वर्णा वर वर्जिता ५५

जर रुद्र हरा हन्त्री सर्व संहार कारिणी  
पुरुशा पौरुशी तुष्टिः सर्व तन्त्र प्रसूतिका ५६

अर्ध नारीज्वरी देवी सर्व विद्या प्रदायिनी  
भार्गवी भूजुशी विद्या सर्वोपनिशदा स्थिता ५७

व्योम केजाखिल प्राणा पञ्च कोज विलकशणा  
पञ्च कोजात्मिका प्रत्यक पञ्च ब्रह्मात्मिका जिवा ५८

जगज जरा जनित्री च पञ्च कर्म प्रसूतिका

वाग देव्या भरणा कारा सर्व काम्य स्थिता स्थिति ५९

अष्टा दज्ञ चतुः शश्टि पीठिका विद्यया युता  
कालिका कर्षण ज्ञ्यामा यक्शिणी किन्नरेज्वरी ६०

केतकी मल्लिका 'जोका वाराही धरणी ध्रुवा  
नारसिंही महोग्रास्या भक्तानाम आर्ति नाजिनी ६१

अन्तर्वला स्थिरा लक्ष्मीर जरा मरण नाजिनी  
ज्नी रङ्गिता महाकाया सोम सूर्याग्नि लोचना ६२

अदितिर देवमाता च अष्ट पुत्रा अष्ट योगिनी  
अष्ट प्रकतिर अष्टाष्ट विभ्राजद विकता कतिः ६३

दुर्भिक्ष ध्वंसिनी देवी सीता सत्या च रुक्मिणी  
ख्यातिजा भार्गवी देवी देव योनिस तपस्विनी ६४

जाकम्भरी महाजोणा गरुडोपरि संस्थिता  
सिंहगा व्याघ्रगा देवी वायुगा च महाद्रिगा ६५

अकारा दिक्श कारान्ता सर्व विद्याधि देवता  
मन्त्र व्याख्यान निपुणा ज्योतिः जास्त्रैक लोचना ६६

इडा पिघालिका मध्या सुशुम्ना ग्रन्थि भेदिनी  
काल चक्रा ज़योपेता काल चक्र स्वरूपिणी ६७

वैजारदी मति ज़ेश्ठा वरिश्ठा सर्व दीपिका  
वैनायकी वरारोहा ज़ोणि वेला बहिर्वलिः ६८

जम्मिनी जम्भिणी जम्भ कारिणी गण कारिका  
ज़रणी चक्रिकानन्ता सर्व व्याधि चिकित्सकी ६९

देवकी देव संकाज़ा वारिधिः करुणा करा  
ज़र्वरी सर्व सम्पन्ना सर्व पाप प्रभङ्जनी ७०

एक मात्रा द्वि मात्रा च त्रि मात्रा च तथा 'परा  
अर्ध मात्रा परा सूक्श्मा सूक्श्मार्थार्थ परा 'परा ७१

एकवीरा विजेशाख्या श्ठी देवी मनस्विनी  
नैश्कर्म्या निश्कला लोका ज्ञान कर्माधिका गुणा ७२

सबन्ध्वानन्द सन्दोहा व्योमा कारा 'निरूपिता  
गद्य पद्यात्मिका वाणी सर्वा लघ्वकार संयुता ७३

साधु बन्ध पद न्यासा सर्वोको घटिकावलिः  
शट कर्मा कर्कज़ा कारा सर्व कर्म विवर्जिता ७४

आदित्य वर्णा चापर्णा कामिनी वर रूपिणी  
ब्रह्माणी ब्रह्म सन्ताना वेद वागीज्वरी जिवा ७५

पुराण न्याय मीमांसा धर्म ज्ञास्त्रागम ज्ञुता  
सद्यो वेदवती सर्वा हंसी विद्याधि देवता ७६

विज्वेज्वरी जगद्धात्री विज्व निर्माण कारिणी  
वैदिकी वेद रूपा च कालिका काल रूपिणी ७७

नारायणी महादेवी सर्व तत्त्व प्रवर्तिनी  
हिरण्य वर्ण रूपा च हिरण्य पद सम्भवा ७८

कैवल्य पदवी पुण्या कैवल्य ज्ञान लक्षिता  
ब्रह्म सम्पत्ति रूपा च ब्रह्म सम्पत्ति कारिणी ७९

वारुणी वारुणा राध्या सर्व कर्म प्रवर्तिनी  
एकाक्षर परा 'युक्ता सर्व दारिद्र्य भङ्गिनी ८०

पाजा अधकुजान्विता दिव्या वीणा व्याख्याक्ष सूत्र भत  
एक मूर्तिस त्रयी मूर्तिर मधु कैटभ भङ्गिनी ८१

साध्व्या साध्व्यवती ज्वाला ज्वलन्ती काम रूपिणी

जाग्रन्ती सर्व सम्पत्तिः सुशुप्तान्वेष्ट दायिनी ८२

कपालिनी महा दंस्ट्रा भ्रुकुटी कुटिलानना  
सर्वा वासा सुवासा च बहत्य अश्टिज च जङ्करी ८३

चन्दो गण प्रतिष्ठा च कल्माशी करुणात्मिका  
चक्शुश्मती महाघोशा खड्ग चर्म धराजनिः ८४

जिल्प वैचित्र्य विद्योता सर्वतोभद्र वासिनी  
अचिन्त्य लक्षणा कारा सूत्र भाश्य निबन्धना ८५

सर्व वेदार्थ सम्पत्तिः सर्व ज्ञास्त्रार्थ मातका  
अकारा दिक्श कारान्त सर्व वर्ण कत स्थला ८६

सर्व लक्ष्मीः सदानन्दा सारविद्या सदाजिवा  
सर्वज्ज्ञा सर्व जक्तिज च खेचरी रूप गोच्चिता ८७

अणिमादि गुणोपेता परा काश्ठा परा गतिः  
हंस युक्त विमान स्था हंसारूडा जजिप्रभा ८८

भवानी वासना जक्तिर आकतिस्था 'खिलाखिला  
तन्त्र हेतुर विचित्राघ्नी व्योम गघ्ना विनोदिनी ८९

वर्शा च वार्शिका चैव ग यजुस साम रूपिणी  
महा नदी नदी पुण्या 'गण्या पुण्य गुणक्रिया ९०

समाधि गत लभ्यार्था ज्ञोतव्या स्वप्रिया घणा  
नामाक्षर परा देवी उपसर्ग नखाङ्घ्रिता ९१

निपातोर उद्वयी जघ्घा मातका मन्त्र रूपिणी  
आज्ञीना च जयाना च तिष्ठन्ती धावनाधिका ९२

लक्ष्य लक्षण योगाढ्या ताद रूप्य गणन आकतिः  
सैक रूपा नैक रूपा सेन्दु रूपा तद आकतिः ९३

समासतद धिता कारा विभक्ति वचनात्मिका  
स्वाहा कारा स्वधा कारा ज्ञी पत्य अर्धाघा नन्दिनी ९४

गम्भीरा गहना गुह्या योनि लिघगार्ध धारिणी  
ज्ञेश वासुकि संसेव्या चशाला वर वर्णिनी ९५

कारुण्या कार सम्पत्तिः कील कन मन्त्र कीलिका  
जक्ति बीजात्मिका सर्व मन्त्रेश्टा क्शय कामना ९६

आग्नेयी पार्थिवा आप्या वायव्या व्योम केतना  
सत्य ज्ञानात्मिका 'नन्दा ब्राह्मी ब्रह्म सनातनी ९७

अविद्या वासना माया प्रकृतिः सर्व मोहिनी  
जक्तिर धारण जक्तिज च चिद अचिच चक्ति योगिनी ९८

वक्त्रारुणा महा माया मरीचिर मद मर्दिनी  
विराट स्वाहा स्वधा जुद्धा नीरूपास्तिः सुभक्तिगा ९९

निरूपित द्वयी विद्या नित्यानित्य स्वरूपिणी  
वैराज मार्ग सङ्चारा सर्व सत्पथ दर्जिनी १००

जालन्धरी मडानी च भवानी भव भङ्जनी  
त्रै कालिक ज्ञान तन्तुस त्रि काल ज्ञान दायिनी १०१

नादातीता स्मृतिः प्रज्ज्ञा धात्री रूपा त्रिपुशकरा  
पराजिता विधानज्ज्ञा विजिशित गुणात्मिका १०२

हिरण्य केजिनी हेम ब्रह्म सूत्र विचक्राणा  
असद्येय परार्धान्त स्वर व्यङ्जन वैखरी १०३

मधुजिह्वा मधुमती मधु मासो दया मधुः  
माधवी च महाभागा मेघ गम्भीर निस्वना १०४

ब्रह्म विश्णु महेजादि ज्ज्ञात व्यार्थ विजेशगा



नाभौ वह्नि जिखा कारा ललाटे चन्द्र जन्निभा १०५

भ्रू मध्ये भास्करा कारा सर्व तारा कतिर हृदि  
कत्तिकादि भरण्य अन्त नक्षत्रेश्च्य आर्चितो दया १०६

ग्रह विद्यात्मिका ज्योतिर ज्योतिर विन्मति जीविका  
ब्रह्माण्ड गर्भिणी बाला सप्ता वरण देवता १०७

वैराजोत्तम साम्राज्या कुमार कुजलो दया  
बगला भ्रम रांबा च जिवदूती जिवात्मिका १०८

मेरु विन्ध्याति संस्थाना काज्मीर पुर वासिनी  
योगनिद्रा महानिद्रा विनिद्रा राक्शस आज्रिता १०९

सुवर्णदा महा गघ्ना पङ्खाख्या पङ्ख संहतिः  
सुप्रजाता सुवीरा च सुपोशा सुपतिः जिवा ११०

सुगहा रक्त बीजान्ता हत कन्दर्प जीविका  
समुद्र व्योम मध्यस्था सम बिन्दु समाज्रया १११

सौभाग्य रस जीवातुः सारा सार विवेक दक  
त्रिवल्यादि सुपुश्टाघ्ना भारती भरताज्रिता ११२

नाद ब्रह्म मयी विद्या ज्ञान ब्रह्ममयी परा  
ब्रह्म नाडी निरुक्तिः च ब्रह्म कैवल्य साधनम् ११३

कालिकेय महोदार वीर्य विक्रम रूपिणी  
वडवाग्नि जिखा वक्त्रा महा कवल तर्पणा ११४

महाभूता महादर्पा महासारा महाक्रतुः  
पङ्च भूत महाग्रासा पङ्च भूतादि देवता ११५

सर्व प्रमाणा सम्पत्तिः सर्व रोग प्रतिक्रिया  
ब्रह्माण्डान्तर बहिर व्याप्ता विष्णु वक्त्रो विभूशिणी ११६

जाघ्करी विधि वक्त्र स्था प्रवरा वर हेतुकी  
हेम माला जिखा माला त्रिजिखा पङ्च मोचना ११७

सर्वागम सदाचारा मर्यादा यातु भङ्गजनी  
पुण्य जल्लोक प्रबन्धाढ्या सर्वान्तर्यामि रूपिणी ११८

साम गान समाराध्या ज्रोत्र कर्ण रसायनम्  
जीव लोकैक जीवातुर भद्रो दार विलोकना ११९

तडित कोटि लसत कान्तिः तरुणी हरि सुन्दरी  
मीन नेत्रा च सेन्द्राकशी विजालाकशी सुमघाला १२०

सर्व मघाल संपन्ना साक्शान मघाल देवता  
देह हद दीपिका दीप्तिर जिह्व पाप प्रणाजिनी १२१

अर्ध चन्द्रोल्लसद दंस्ट्रा यज्झ वाटी विलासिनी  
महादुर्गा महोत्साहा महादेव बलोदया १२२

डाकिनीड्या ज़ाकिनीड्या साकिनीड्या समस्तजुट  
निरध्कुजा नाकिवन्द्या शडा धाराधि देवता १२३

भुवन ज्झानिनिः ज़्रेणी भुवनाकार वल्लरी  
जाज्वती जाज्वता कारा लोकानुग्रह कारिणी १२४

सारसी मानसी हंसी हंस लोक प्रदायिनी  
चिन मुद्रा अलध्कत करा कोटि सूर्य सम प्रभा १२५

सुख प्राणिः जिरो रेखा नद दश्ट प्रदायिनी  
सर्व साध्कर्य दोशघ्नी ग्रहोपद्रव नाजिनी १२६

कशुद्र जन्तु भय घ्नी च विश रोगादि भङ्गजनी  
सदा ज़ान्ता सदा ज़ुब्धा गहच चिद्र निवारिणी १२७

कलि दोश प्रजमनी कोलाहल पुर स्थिता

गौरी काकशणिकी मुख्या जघन्याकति वर्जिता १२८

मायाविद्या मूल भूता वासवी विश्णु चेतना  
वादिनी वसु रूपा च वसु रत्न परिच्चदा १२९

चांदसी चन्द्र हृदया मन्त्र स्वच्चन्द भैरवी  
वनमाला वैजयन्ती पङ्च दिव्या युधात्मिका १३०

पीताम्बर मयी चङ्चत कौस्तुभा हरि कामिनी  
नित्या तथ्या रमा रामा रमणी मत्यु भङ्जनी १३१

ज्येष्ठा काश्ठा धनिश्ठान्ता ज़राघ्नी निर्गुण प्रिया  
मैत्रेया मित्रविन्दा च ज़ेश्य ज़ेश कला ज़या १३२

वाराणसी वासरताच आर्यावर्त जन स्तुता  
जगद उत्पत्ति संस्थान संहार त्रय कारणम १३३

त्वम अम्ब विश्णु सर्वस्वं नमस्ते 'स्तु महेज्वरि  
नमस्ते सर्व लोकानां जनन्यै पुण्य मूर्तये १३४

सिद्ध लक्ष्मीर महाकालि महालक्ष्मी नमो 'स्तु ते  
सद्योजातादि पङ्चाग्निः रूपा पङ्चक पङ्चकम १३५

यन्त्र लक्ष्मीर भवत्य आदिर आद्य आद्ये ते नमो नमः  
सश्रुत्यादि कारणा कार वितते दोश वर्जिते १३६

जगल लक्ष्मीर जगन मातर विष्णु पत्नि नमो 'स्तु ते  
नव कोटि महाजक्ति समुपास्य पदाम्बुजे १३७

कनत सौवर्ण रत्नाढ्ये सर्वा भरण भूशिते  
अनन्ता नित्य महिशि प्रपङ्चेज्वर नायकि १३८

अत्य उच्चित पदान्तस स्थे परम व्योम नायकि  
नाक पशुठ गताराध्ये विष्णु लोक विलासिनि १३९

वैकुण्ठ राज महिशि ज्ञी रघा नगराजिते  
रघा नायकि भू पुत्रि कशणे वरद वल्लभे १४०

कोटि ब्रह्मादि संसेव्ये कोटि रुद्रादि कीर्तिते  
मातुलघा मयं खेटं सौवर्ण चशकं तथा १४१

पद्म द्वयं पूर्ण कुंभं कीरं च वरदाभये  
पाजम अधकुजकं जघखं चक्रं जूलं कपाणिकाम १४२

धनुर बाणौ चाक्श मालां चिन्मुद्राम अपि बिभ्रती  
अश्टादज भुजे लक्ष्मी महाश्टादज पीठगे १४३

भूमि नीलादि संसेव्ये स्वामि चित्तानुवर्तिनि  
पद्मे पद्मालये पद्मि पूर्ण कुम्भा अभिशोचते १४४

इन्दिरेन्दिरा अभाक्शि कशीर सागर कन्यके  
भार्गवि त्वं स्व तन्त्रेद्या वजी कत जगत पतिः १४५

मघालं मघालानां त्वं देवतानां च देवता  
त्वम उत्तमोत्तमानां च त्वं ज्ञेयः परमामतम १४६

धन धान्या भिवद्धिज च सार्वभौम सुखोच्च्रया  
आन्दोलिकादि सौभाग्यं मत्तेभादि महोदयः १४७

पुत्र पौत्राभि वद्धिज च विद्या भोग बलादिकम  
आयुर आरोग्य सम्पत्तिर अश्टैज्वर्यं त्वम एव हि १४८

पदम एव विभूतिज च सूक्ष्मात सूक्ष्मतरा गतिः  
सदया आपाघा सन्दत्त ब्रह्मेन्द्रादि पद स्थितिः १४९

अव्याहत महाभाग्यं त्वम एवाकशोभ्य विक्रमः  
समन्वयज च वेदानाम अविरोधस त्वम एव हि १५०

निःज्ञेयस पद प्राप्ति साधनं फलम एव च

ॐ मन्त्र राज राज्ञी च ॐविद्या क्शेम कारिणी १५१

ॐ बीज जप सन्तुष्टा ऐं-हीम-ॐम-बीज पालिका  
प्रपत्ति मार्ग सुलभा विष्णु प्रथम किष्करी १५२

क्लीं कारार्थ सावित्री च सौमघाल्या अधिदेवता  
ॐ शोडजाकशरी विद्या ॐ यन्त्र पुर वासिनी १५३

सर्व मघाल माघाल्ये जिवे सर्वार्थ साधिके  
जरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमो 'स्तु ते  
पुनः पुनर नमस्ते 'स्तु साष्टाघाम युतं पुनः १५४

सनत्कुमार उवाच  
एवं स्तुता महालक्ष्मीर ब्रह्म रुद्रादिभिः सुरैः  
नमद्भिर आर्तेर दीनैज च निस्स्वत्वैर भोग वर्जितैः १५५

ज्येष्ठा जुष्टैज च निःॐकैः संसारा स्व परायणैः  
विष्णुपत्नी ददौ तेषां दर्जनं दशित तर्पणम १५६

जरत पुर्णेन्दु कोट्याभ धवलापाघा वीक्शणैः  
सर्वान सत्त्व समाविष्टान चक्रे हृष्टा वरं ददौ १५७

महालक्ष्मीर उवाच

नाम्नां साष्ट सहस्रं मे प्रमादाद्वापि यः सकत  
कीर्तयेत तत कुले सत्यं वसाम्या चन्द्र तारकम १५८

किं पुनर नियमाज जप्तुर मद एक जरणस्य च  
मात वत्सानुकम्पाहं पोशकी स्याम अहर निजम १५९

मन नाम स्तवतां लोके दुर्लभं नास्ति चिन्तितम  
मत प्रसादेन सर्वे 'पि स्वस्वेष्टार्थम अवाप्स्यथ १६०

लुप्त वैश्रणव धर्मस्य मद व्रतेश्च अवकीर्णिनः  
भक्ति प्रपत्ति हीनस्य वन्द्यो नाम्नां स्तवो 'पि मे १६१

तस्माद अवज्यं तैर दोशैर विहीनः पाप वर्जितः  
जपेत साष्ट सहस्रं मे नाम्नां प्रत्यहम आदरात् १६२

साकशाद अलक्ष्मी पुत्रो 'पि दुर्भाग्यो 'प्य अलसो 'पि वा  
अप्रयत्नो 'पि मूढो 'पि विकलः पतितो 'पि च १६३

अवज्यं प्राप्नुयाद भाग्यं मत्प्रसादेन केवलम  
स्पहेयम अचिरात् देवा वरदानाय जापिनः  
ददामि सर्वम इष्टार्थं लक्ष्मीति स्मरतां ध्रुवम १६४

सनत्कुमार उवाच



इत्य उक्त्वा अन्तर्दधे लक्ष्मीर वैष्णवी भगवत कला  
इश्टा पूर्तं च सुकृतं भाग धेयं च चिन्तितम १६५

स्वं स्वं स्थानं च भोगं च विजयं लेभिरे सुराः  
तद एतत प्रवदाम्य अद्य लक्ष्मी नाम सहस्रकम  
योगिनः पठत किशप्रं चिन्तितार्थान अवाप्स्यथ १६६

गार्ग्य उवाच  
सनत कुमारो योगीन्द्र इत्य उक्त्वा स दयानिधिः  
अनुगह्य ययौ किशप्रं तांज च द्वादज योगिनः १६७

तस्माद एतद रहस्यं च गोप्यं जप्यं प्रयत्नतः  
अश्टम्यां च चतुर्दज्यां नवाभ्यां भगु वासरे १६८

पौर्णमास्याम अमायां च पर्व काले विज्ञेशतः  
जपेद वा नित्य कार्येशु सर्वान कामान अवाप्नुयात १६९

इति स्कन्द पुराणे सनत्कुमार सम्हितायाम  
ज्ञी लक्ष्मी सहस्र नाम स्तोत्रं संपूर्णम